□□□□□ □□□□□

जनसत्ता 3 सतिंबर, 2014: आपातकाल की घोषणा के बाद मैं पहली बार दलि्ली गया था□ उस दौरान □क मति्र के साथ हम गौतमनगर में रहते थे□ चालीस रुप□ मासकि करि□ पर□ हमारा कमरा □क मंजलिी इमारत की छत पर था और सामने थी थो□ी-सी जगह□ खुशनुमा दनि वे होते थे जब करोलबाग में रहने वाले □क बहिारी परविार में कुछ वशिेष खाने के लि□ हमें आमंत्रति कयिा जाता□ वहां गु□ मलिे चावल की खीर बनती और पू□यिां□ उन दनिों कांग्रेस का राज था□ अवैध कालोनयिों पर बुलडोजर चल रहे थे और उन्हें बचाने के लि□ संजय गांधी की शरण में जाना प□ता था□

इतहिास का शोधकर्ता तो नहीं, लेकनि कुछ बातें मोटी बुद्धि से समझ सका कि सामंती और राजशाही के युग में राजे-रजवा□ शहर बसाया करते थे□ हस्तनिापुर में पांडवों को सूई भर जमीन देने के लि□ जब दुर्योधन तैयार नहीं हुआ तो उन्होंने इंद्रप्रस्थ बनवाया□ हैदराबाद के नजिाम ने हैदराबाद, वजियवा□ा के राजघरानों ने वजियवा□ा□ इसी तरह कई शहर मुगलों के जमाने में अस्तत्वि में आ□, जो मूलत: जनता की गा□ी कमाई की लूट से बनते थे□ फरि वाणज्यि व्यापार के केंद्र के रूप में इतहिास के दौर में कई शहर बने□ आधुनकि भारत में कल-करखानों के साथ बोकारो, भलिाई, दुर्गापुर और रांची जैसे औद्योगकि शहर अस्तत्वि में आ□□ हालांकि औद्योगकि शहर के रूप में वकिसति होने के पहले भी उन इलाकों में कुछ आर्थकि गतवििधियिां चलती थीं□ मसलन, औद्योगकि शहर बोकारो के अस्तत्वि में आने से पहले वहां चास नाम का शहर आबाद था, जहां संभवत: चासी यानी ब□ कसिान रहते थे और यह आदविासी इलाकों में पैदा होने वाले लाह के व्यापार का केंद्र था□ इसी तरह □चईसी के अस्तत्वि में आने के पहले भी ईसाई मशिनरयिों की सक्रयिता, सघनता और बहिार की उप-राजधानी होने की वजह से रांची □क शहर के रूप में वकिसति हो रहा था□ लेकनि उन्हें गति मलिी आर्थकि आधार मलिने के बाद□

मगर अब आर्थकि गतवििधियिों का अर्थ बदल गया है□ कसिी जमाने में मुंबई कप□ा मलिों के लि□ वखि्यात था□ पश्चमि बंगाल का मुर्शदिाबाद कांसे के बर्तनों और मलमल के कप□ों के लि□□ मझोले उद्योग के दायरे में चलने वाले ये उद्योग समाप्तप्राय हैं□ उपभोक्ता माल अब केंद्रीकृत रूप में बनता है□ बहुधा उत्पादन के केंद्र पछि□ इलाके में होते हैं□ शहर अब उद्योग वाणज्यि का केंद्र नहीं□ प्रभु वर्ग की रहिाइश का ठकिाना है□ वहां जनप्रतनिधिि, सरकारी अधकिारी, कर्मचारी, प्रोफेसर, डॉक्टर, वकील, पत्रकार या फरि बलि्डर, उद्योगपति, सटोरि□ आदि रहते हैं□ शक्षिा का केंद्र होने की वजह से ब□ी संख्या में वद्यिार्थी भी, जनि्हें अगर हॉस्टलों में जगह मलि गई तो ठीक, वरना बेहद तंगहाल बस्तयिों में रहते हैं□ शहर के लि□ महरी, मजदूर, ठेला-रक्शिा वाले, छोटे-मोटे करीगरों की भी जरूरत होती है□ लेकनि ऐसे लोगों के लि□ शहर में कभी जगह नहीं रही□ वे बुनयिादी सुवधिावहिीन झोप□पट्यिों में रहते हैं□ और यूज ऐंड थ्रो वाली जो संस्कृति आ रही है, उसमें छोटे-मोटे मसि्त्रयिों की जरूरत ही नहीं□ ब□ शहरों में अब मेनटेनेंस का काम भी कॉरपोरेट जगत करता है□ हर कंपनी का अपना कस्टमर केयर सेंटर है□ पुरानी मक्सिी, टेबल फैन, आयरन आदि बनाने वाला मसि्त्री अब आपको छोटे-मोटे कस्बों में ही मलिेगा□ नवीं मुंबई, पनवेल जैसे आधुनकि शहरों में तो कोई झोप□पट्टी भी आपको नहीं दखिेगी□ अब तो ऐसी दीवारों से घरिे शहरों की कल्पना की जा रही है, जहां मजदूर आ□ंगे और शाम ढलने के पहले नकिल लेंगे□ ब□ी-ब□ी कॉलोनयिां इसी तर्ज पर बन रही हैं□

इसलि□, जब मोदी कहते हैं कि वे सौ न□ शहर बना□ंगे तो उसका अर्थ क्या है? क्या शहर कसिी के बना□ बनता है? क्या वे मध्ययुगीन बादशाह हैं, जो शहर बनवा□ंगे? अगर उनकी नीतयिों से नवधनाढ्य वर्ग की आबादी में इजाफा होता है और उसके लि□ शहरों का वसि्तार होता है, तो क्या उन न□ सुवधिा संपन्न रहिायशी इलाकों में गरीब गुरबों के लि□ जगह होगी? बंगलुरु और मैसूर के बीच शहर पसरता जा रहा है□ मुंबई और पुणे के बीच शहर का वसि्तार होता जा रहा है□ अपने झारखंड में टाटा और रांची के बीच तमा□, बुंडू आदि शायद कल न रहें या उनका चेहरा इस कदर बदल जा□ कि हम आप उसे पहचान भी नहीं सकें□ लेकनि तब सामान्य लोगों के लि□ वहां जगह रह जा□गी? फरि ऐसे शहरों का हमारे लि□ क्या महत्त्व? इसलि□ बेहतर तो यह होता कि मोदी मूलभूत नागरकि सुवधिाओं को घर-घर पहुंचाने की बात करते□ लेकनि यह दुष्कर कार्य है□ आसान है शहर बनाना, क्योंकि यह बस लूट की छूट देने मात्र से हो जा□गा□ और शहर में जन साधारण के लि□ माकूल जगह न भी हो, लेकनि वह आज भी □क रूमानी सपना है□ और मोदी सपनों के सौदागर□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta